पथ्यास्वस्ति

वेद में वर्णमातृका (वर्णमाला) को पथ्यास्वस्ति कहा गया है। अतः पथ्यास्वस्ति का अर्थ वर्णमातृका है।पण्डित मधुसूदन ओझजी के 'वेदाङ्ग समीक्षा' विभाग के अन्तर्गत 'वाक्पदिका' ग्रन्थ विभाग में 'पथ्यास्वस्ति' ग्रन्थ का स्थान है। यह ग्रन्थ 'वर्णसमीक्षा' का अवान्तर प्रकरण है। इस ग्रन्थ में वाक् के विभिन्न स्वरूप एवं प्रकार के विश्लेषण करते हुए वर्णरूपा वाक् को जिसे पथ्यास्वस्ति कहते हैं। पथ्यास्वस्ति शब्द के दो अर्थ हैं-

प्रथम अर्थ- स्वरव्यञ्जनादि विभाग से विभक्त वाक् वर्णरूपा है । वाग्वाचक पथ्यास्वस्ति शब्द सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि शतपथब्राह्मण एवं कौषितकि ब्राह्मण श्रुति ने 'वाग्वै पथ्यास्वस्ति' का निर्देश किया है।

द्वितीय अर्थ- जिस मार्ग पर सूर्य चलता हुआ दृष्टिगोचर होता है, वह मार्ग सूर्य के चारों ओर चलने वाली पृथवी का मार्ग है। उस मार्ग को भी वेद में 'पथ्यास्वस्ति' कहा जाता है। क्योंकि श्रुति ने 'यथाग्निगर्भा पृथवी' का निर्देश किया है।

पथ्यास्वस्ति में पाँच प्रपाठ हैं। यह प्रपाठ अध्याय का द्योतक है। इन प्रपाठों के क्रमशः नाम इस प्रकार हैं- मातृकापरिष्कार, यमपरिष्कार, गुणपरिष्कार, अक्षरनिर्देशपरिष्कार और सन्धिपरिष्कार। प्रथमप्रपाठ से लेकर चतुर्थ प्रपाठ तक प्रथमखण्ड, द्वितीयखण्ड आदि विभाग भी मिलता है। इनमें अधोलिखित विषयों को समाहित किया गया है:-

वर्णसमाम्नाय, अयोगवाह, स्वर्भक्ति, रङ्ग, अनुस्वार, विसर्ग, औरस्योष्मा, जिह्वामूलीयोपध्मानीयौ, यम, साप्ताशीतिशतिक, ब्राह्मवर्णसमाम्नाय, माहेश्वरवर्णसमाम्नाय, सापत्त्रिंशकः, वर्णनिर्देशादिपरिशिष्टविचारः आदि विषय हैं।

वर्णसमीक्षा एवं पथ्यास्वस्ति परस्पर एक दूसरे का पूरक ग्रन्थ है । कुछ विषयों का विवेचन दोनों ग्रन्थों में भिन्न शैली में वर्णित है । शैली भेद से विषय भेद स्पष्टतया प्रतीत होता है।

यह पूर्णरूप से भाषाशास्त्रीय विश्लेषण का ग्रन्थ है । इसमें भाषा की उच्चारण शैली और उसके अर्थ की अभिव्यक्ति का विषय वर्णित है।